4 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

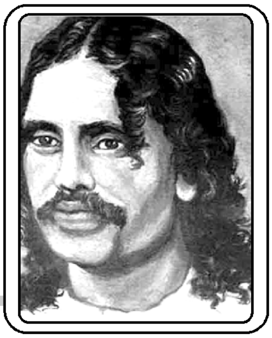

जीवन-परिचय—युग-प्रवर्तक कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म काशी के एक सम्पन्न वैश्य परिवार में सन् 1850 ई० के सितम्बर माह में हुआ था। इनके पिता गोपालचन्द्र जी 'गिरिधरदास' उपनाम से काव्य-रचना करते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सात वर्ष की अवस्था में ही एक दोहे की रचना की, जिसको सुनकर पिता ने इनको महान् कवि बनने का आशीर्वाद दिया। 10 वर्ष की अवस्था में ही भारतेन्दु हरिश्चन्द्र माता-पिता के सुख से वंचित हो गये थे। इनकी आरम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई, जहाँ इन्होंने हिन्दी, उर्दू, बँगला एवं अंग्रेजी का अध्ययन किया। इसके पश्चात् क्वीन्स कालेज, वाराणसी में प्रवेश लिया, किन्तु काव्य-रचना में रुचि होने के कारण इनका मन अध्ययन में नहीं लगा और इन्होंने शीघ्र ही कालेज छोड़ दिया। इनका विवाह 13 वर्ष की उम्र में ही मन्नो देवी के साथ हो गया था। काव्य-रचना के अतिरिक्त इनकी रुचि यात्राओं में भी थी। 15 वर्ष की अवस्था में ही जगन्नाथपुरी की यात्रा के पश्चात् ही इनके मन में साहित्य-सृजन की इच्छा अंकुरित हुई थी।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—1850 ई०।
- **जन्म-स्थान**—वाराणसी (उ० प्र०)।
- **पिता**—गोपालचन्द्र।
- **भाषा**—ब्रज भाषा एवं खड़ीबोली।
- भारतेन्दु युग के प्रवर्तक।
- **मृत्यु**—1885 ई०।

भारतेन्दु जी बहुत उदार एवं दानी थे। उदारता के कारण शीघ्र ही इनकी आर्थिक दशा शोचनीय हो गयी और ये ऋणग्रस्त हो गये। छोटे भाई ने भी इनकी दानशीलता के कारण सम्पत्ति का बँटवारा करा लिया था। ऋणग्रस्तता के समय ही ये क्षय रोग के शिकार भी हो गये। इन्होंने रोग से मुक्त होने का हर-सम्भव प्रयत्न किया, किन्तु रोग से मुक्त नहीं हो सके। सन् 1885 ई० में इसी रोग के कारण मात्र 35 वर्ष की अल्पायु में ही भारतेन्दु जी का स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक सेवाएँ—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एक प्रतिभासम्पन्न एवं युग-प्रवर्तक साहित्यकार थे। अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हुए इन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास में अमूल्य योगदान दिया। इन्होंने हरिश्चन्द्र चंद्रिका, कवि वचन सुधा और बालाबोधिनी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। ये अनेक भारतीय भाषाओं में कविता करते थे, किन्तु ब्रजभाषा पर इनका विशेष अधिकार था। हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने के लिए इन्होंने न केवल स्वयं साहित्य का सृजन किया, अपितु अनेक लेखकों को भी इस दिशा में प्रेरित किया। सामाजिक, राजनीतिक एवं राष्ट्रीयता की भावना पर आधारित अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतेन्दु जी ने

एक नवीन चेतना उत्पन्न की। इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर तत्कालीन पत्रकारों ने सन् 1880 ई० में इन्हें 'भारतेन्दु' की उपाधि से सम्मानित किया।

रचनाएँ—अल्पायु में ही भारतेन्दु जी ने हिन्दी को अपनी रचनाओं का अप्रतिम कोष प्रदान किया। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) काव्य-कृतियाँ—भक्त सर्वस्व, प्रेम-मालिका, प्रेम माधुरी, नए जमाने की मुकरी, सुमनांजलि, प्रेम तरंग, उत्तरार्द्ध-भक्तमाल, प्रेम-प्रलाप, गीत-गोविन्दानन्द, होली, मधु मुकुल, राग-संग्रह, वर्षा विनोद, विनय प्रेम पचासा, फूलों का गुच्छा, प्रेम फुलवारी, कृष्ण चरित्र, प्रेमाश्रु-वर्षण, दान लीला, प्रेम-सरोवर, वीरत्व, विजय-वल्लरी, विजयिनी, विजय पताका, बन्दर सभा, बकरी विलाप, तन्मय लीला।

(2) नाटक—'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'श्री चन्द्रावली', 'भारत दुर्दशा', 'नीलदेवी', 'अंधेर नगरी', 'विषस्य विषमौषधम्', 'प्रेम जोगिनी' एवं 'सती प्रताप' आदि।

(3) उपन्यास—'पूर्णप्रकाश', 'चन्द्रप्रभा'। ये दोनों सामाजिक उपन्यास हैं।

(4) यात्रा-वृत्तान्त—'सरयूपार की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा'। इसके अतिरिक्त जीवनियाँ, इतिहास और पुरातत्त्व सम्बन्धी रचनाएँ भी इनकी प्राप्त होती हैं।

(5) अनूदित रचनाएँ–भारतेन्दु ने बांग्ला भाषा से 'विद्या सुंदर' नामक नाटक का हिन्दी में अनुवाद किया था। संस्कृत से मुद्राराक्षस और प्राकृत से 'कर्पूर मंजरी' नामक नाटकों का भी हिन्दी में अनुवाद किया। विद्या सुंदर, पाखण्ड विडम्बन, धनंजय विजय, भारत जननी, दुर्लभ बन्दु इनकी कुछ अन्य अनूदित रचनाएँ हैं।

(6) निबन्ध संग्रह–भारतेन्दु ग्रन्थावली, नाटक, कालचक्र, लेवी प्राण लेवी, भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?, कश्मीर कुसुम, जातीय संगीत, संगीत सार, हिन्दी भाषा, स्वर्ग में विचार सभा।

(7) आत्मकथा–एक कहानी–कुछ आपबीती, कुछ जगबीती।

भाषा-शैली—भारतेन्दु जी का खड़ीबोली एवं ब्रजभाषा; दोनों पर ही समान अधिकार था। इन्होंने अपने काव्य के सृजन हेतु ब्रजभाषा को ही अपनाया। साथ ही प्रचलित शब्दों, मुहावरों एवं कहावतों का यथास्थान प्रयोग किया है। इन्होंने मुख्य रूप से मुक्तक शैली का प्रयोग किया। इनके द्वारा प्रयुक्त शैली प्रवाहपूर्ण सरल, सरस एवं भावपूर्ण है।

♦

प्रेम-माधुरी

कूकै लगीं कोइलैं कदंबन पै बैठि फेरि
धोए-धोए पात हिलि-हिलि सरसै लगे।
बोलै लगे दादुर मयूर लगे नाचै फेरि
देखि के सँजोगी-जन हिय हरसै लगे।।
हरी भई भूमि सीरी पवन चलन लागी
लखि 'हरिचंद' फेरि प्रान तरसै लगे।
फेरि झूमि-झूमि बरषा की रितु आई फेरि
बादर निगोरे झुकि झुकि बरसै लगे।।1।।

जिय पै जु होइ अधिकार तो बिचार कीजै
लोक-लाज, भलो-बुरो, भले निरधारिए।
नैन, श्रौन, कर, पग, सबै पर-बस भए
उतै चलि जात इन्हैं कैसे कै सम्हारिए।
'हरिचंद' भई सब भाँति सों पराई हम
इन्हें ज्ञान कहि कहो कैसे कै निबारिए।
मन में रहै जो ताहि दीजिए बिसारि, मन
आपै बसै जामैं ताहि कैसे कै बिसारिए।।2।।

यह संग में लागियै डोलैं सदा, बिन देखे न धीरज आनती हैं।
छिनहू जो वियोग परै 'हरिचंद', तो चाल प्रलै की सु ठानती हैं।
बरुनी में थिरैं न झपैं उझपैं, पल मैं न समाइबो जानती हैं।
पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना, अँखियाँ, दुखियाँ नहिं मानती हैं।।3।।

पहिले बहु भाँति भरोसो दयो, अब ही हम लाइ मिलावती हैं।
'हरिचंद' भरोसे रही उनके सखियाँ जो हमारी कहावती हैं।।
अब वेई जुदा ह्वै रहीं हम सों, उलटो मिलि कै समुझावती हैं।
पहिले तो लगाइ कै आग अरी! जल को अब आपुहिं धावती हैं।।4।।

ऊधौ जू सूधो गहो वह मारग, ज्ञान की तेरे जहाँ गुदरी है।
कोऊ नहीं सिख मानिहै ह्याँ, इक स्याम की प्रीति प्रतीति खरी है।।
ये ब्रजबाला सबै इक सी, हरिचंद जू मण्डली ही बिगरी है।
एक जौ होय तो ज्ञान सिखाइए कूप ही में यहाँ भाँग परी है।।5।।

सखि आयो बसंत रितून को कंत, चहूँ दिसि फूलि रही सरसों।
बर सीतल मंद सुगंध समीर सतावन हार भयो गर सों।।
अब सुंदर साँवरो नंद किसोर कहै 'हरिचंद' गयो घर सों।
परसों को बिताय दियो बरसों तरसों कब पाँय पिया परसों।।6।।

इन दुखियान को न चैन सपनेहुँ मिल्यो,
तासों सदा व्याकुल बिकल अकुलायँगी।
प्यारे हरिचंदजू की बीती जानि औधि, प्रान,
चाहत चले पै ये तो संग ना समायँगी।।
देखौ एक बारहू न नैन भरि तोहिं यातें
जौन-जौन लोक जैहैं तहाँ पछतायँगी।
बिना प्रान-प्यारे भये दरस तुम्हारे हाय
मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जायँगी।।7।।

अभ्यास प्रश्न

• विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(अ) कूकै लगीं...बरसै लगे।

(ब) जिय पै जु...बिसारिए।

(स) पहिले बहु भाँति....................................धावती हैं।

(द) ऊधौ जू सूधो...भाँग परी है।

(य) इन दुखियान को....................................रहि जायँगी।

2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन-परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की साहित्यिक सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनके जीवन-परिचय पर प्रकाश डालिए।

अथवा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कृतियों का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

3. 'प्रेम माधुरी' के सम्बन्ध में भारतेन्दु जी के विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'प्रलय' की चाल से कवि का क्या तात्पर्य है?
2. श्रीकृष्ण को भूलने में गोपियाँ अपने को असमर्थ क्यों पाती हैं?
3. *'कूप ही में यहाँ भाँग परी है'* से क्या तात्पर्य है?
4. निगोरे का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि बादलों को 'निगोड़े' क्यों कहा गया है?
5. 'आग लगाकर पानी के लिए दौड़ने' से कवि का क्या आशय है?
6. वियोगिनी की आँखों को सदैव पश्चाताप क्यों रहेगा?
7. कृष्ण के रूप-सौन्दर्य को देखे बिना गोपी के नेत्रों की क्या दशा हो गयी?
8. भारतेन्दु जी के लेखन की भाषा लिखिए।
9. 'उतै चलि जात' में किधर की ओर संकेत है?
10. 'रितून को कन्त' किसे और क्यों कहा गया है?
11. गोपियाँ उद्धव से ज्ञान का उपदेश वापस ले जाने के लिए क्यों कह रही हैं?

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र किस युग के साहित्यकार हैं?
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को 'भारतेन्दु' की उपाधि से किसने सम्मानित किया?
3. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।
4. 'प्रेम माधुरी' भारतेन्दु जी की किस भाषा की रचना है?
5. भारतेन्दु-युग के उस कवि का नाम लिखिए, जिसे खड़ीबोली का जनक कहा जाता है।
6. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
   (अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र शुक्ल युग के कवि हैं। ( )
   (ब) 'कवि-वचन-सुधा' पत्रिका के सम्पादक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे। ( )

● काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (अ) परसों को बिताय दियो बरसों तरसों कब पाँय पिया परसों।
   (ब) पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।
   (स) बोलै लगे दादुर मयूर लगे नाचै फेरि,
   देखि कै संजोगी जन हिय हरसै लगे।
2. 'कूकै लगीं कोइलैं कदंबन पै बैठि फेरि' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
3. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
   प्रलय ढाना, पलकों में न समाना, कुएँ में भाँग पड़ी होना।

● आन्तरिक मूल्यांकन

1. भारतेन्दु जी द्वारा गद्य एवं पद्य के क्षेत्र में किये गये योगदान का उल्लेख कीजिए।
2. इस पाठ का जो पद आपको प्रिय लगे, उसे लय एवं ताल के साथ गायें।

♦